कर्तव्य पथ पर खाकी...

एसपी के निर्देशानुसार सोयत कला में मुस्तैद रही पुलिस

टीआई रामगोपाल वर्मा ने बल के साथ संभाली कमान, पूरे नगर में रही शांति

सोयत कला (अनिल बैरागी)



दीपावली के पावन पर्व पर जहां हर कोई अपने परिवार के साथ दीये जलाकर और खुशियां बांटकर त्योहार मना रहा था, वहीं आगर मालवा जिले के सोयत कला में खाकी ने कर्तव्यनिष्ठा की एक बेमिसाल तस्वीर पेश की है। आगर मालवा पुलिस अधीक्षक (एसपी) के विशेष निर्देशों का पालन करते हुए स्थानीय पुलिस प्रशासन ने सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए। 'देशभक्ति-जनसेवा' के मूल मंत्र को सर्वोपरि रखते हुए सोयत कला थाना प्रभारी (टीआई) रामगोपाल वर्मा दीपावली की रात अपनी व्यक्तिगत खुशियों और परिवार को पीछे छोड़ पूरी पुलिस फोर्स के साथ मुस्तैदी से मैदान में डटे रहे।

असामाजिक तत्वों पर पैनी नजर, यातायात भी रहा सुचारू

देर रात तक चली इस विशेष गश्त और सघन निगरानी के दौरान पुलिस बल ने असामाजिक तत्वों पर पैनी नजर रखने के साथ-साथ बाजारों में यातायात व्यवस्था को भी सुचारू बनाए रखा, ताकि किसी भी नागरिक को आवागमन में असुविधा न हो। दीपावली जैसे बड़े महापर्व पर भी अपनों से दूर रहकर, पूरी निष्ठा से अपनी ड्यूटी को ही धर्म मान लेना टीआई रामगोपाल वर्मा, उनकी पूरी पुलिस टीम और बल के अटूट समर्पण को दर्शाता है। सुरक्षा के मोर्चे पर पुलिस का यह मुस्तैद रूप समाज में शांति, सौहार्द और सुव्यवस्था बनाए रखने का सबसे मजबूत आधार साबित हुआ है।

त्याग और कर्तव्य का दीया : जब नगर की खुशियों के लिए अपनों से दूर डटी रही खाकी

दीपावली की वह रात, जब हर घर दीयों की रोशनी से जगमगा रहा था, आंगनों में रंगोलियां सज रही थीं और परिवार एक साथ बैठकर खुशियां बांट रहे थे; ठीक उसी वक्त सोयत कला के माधव चौक पर फर्ज का एक अलग ही दीया जल रहा था। 'देशभक्ति-जनसेवा' सिर्फ एक नारा नहीं, बल्कि खाकी के रग-रग में बहने वाला संकल्प है, जिसे थाना प्रभारी (टीआई) रामगोपाल वर्मा और उनके पूरे पुलिस स्टाफ ने इस पावन रात को चरितार्थ करके दिखाया।

अपने बूढ़े माता-पिता की उम्मीदों, बच्चों की मासूम जिद और जीवनसाथी के इंतजार को पीछे छोड़, टीआई रामगोपाल वर्मा और उनकी पूरी टीम ने नगर की सुरक्षा को ही अपना पहला परिवार मान लिया। जब लोग अपने घरों में चैन की सांस ले रहे थे, तब यह जांबाज पुलिस टीम पूरी रात जागकर नगर के कोने-कोने पर अपनी पैनी नजर बनाए हुए थी।

पैरहन पर सजी यह खाकी वर्दी सिर्फ कपड़े का टुकड़ा नहीं, बल्कि त्याग की पराकाष्ठा है। दीपावली जैसे महापर्व पर भी अपनों से कोसों दूर रहकर, उमड़ती हुई भीड़ के बीच सुरक्षा का पहरा देना एक बेहद भावुक कर देने वाला अहसास है। टीआई रामगोपाल वर्मा और उनके साथियों के इसी निस्वार्थ समर्पण, रातों की मुस्तैदी और कर्तव्य के प्रति इस गहरी निष्ठा के कारण ही पूरा सोयत कला सुरक्षित और शांतिपूर्ण तरीके से दीपावली मना सका। नगर की सुख-शांति के लिए अपनी खुशियों की आहुति देने वाले इन वीर जवानों के जज्बे को शत-शत नमन!

किसी भी क्षेत्र की उन्नति, सुरक्षा और खुशहाली के लिए एक ईमानदार और जनता की समस्याओं को संवेदनशीलता से सुनने वाले थाना प्रभारी का होना सबसे ज्यादा जरूरी होता है। जब पुलिस प्रशासन का मुखिया टीआई रामगोपाल वर्मा जी की तरह कर्तव्यनिष्ठ और जनता के प्रति समर्पित होता है, तो न केवल अपराधों पर लगाम लगती है बल्कि आम नागरिकों में कानून के प्रति विश्वास और सम्मान भी बढ़ता है।

जीवन का मूल्य परिवहन संसाधन एंव आयकर विवरणी के भरोसे

एक ही देश में सड़क, रेल, मेट्रो और विमान दुर्घटना में जीवन खोने वाले व्यक्ति के लिए अलग-अलग कानून, अलग-अलग दायित्व और अलग-अलग निर्धारित राशि दिखाई देती है। यही विसंगति इस बुनियादी प्रश्न को जन्म देती है—क्या मनुष्य के जीवन का मूल्य उस वाहन या परिवहन व्यवस्था के अनुसार बदल जाना चाहिए, जिसमें उसकी मृत्यु हुई है?

देश के सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय के वर्ष 2023 के आंकड़ो में देश में सड़क दुर्घटनाओं में 1.72 लाख से अधिक लोगों की मृत्यु हुई। प्रत्येक मृत्यु में परिवार, आश्रित बच्चे, बुजुर्ग माता-पिता की पालन-पोषण व्यवस्था एक प्रश्नचिन्ह के रुप में खड़ी थी।

दुर्घटना के बाद पीड़ित परिवार के सामने सबसे बड़ा प्रश्न मिलने वाले मुआवजा की अनिश्चता का होता है। कितना और कब? मृतक या घायल की नियमित नौकरी या आय दस्तावेज की उपलब्धता आकलन अपेक्षाकृत आसान करती है। लेकिन किसान, दिहाड़ी मजदूर, स्वरोजगार करने वाला व्यक्ति, छात्र, नाबालिग अथवा असंगठित क्षेत्र के कामगार के मामले में वास्तविक आर्थिक योगदान का निर्धारण देश के कानून में कठिन हो जाता है। न्यायालय ने न्यायोचित क्षतिपूर्ति के सिद्धांत को विकसित अवश्य किया है लेकिन आय, उम्र, आश्रितों की संख्या, भविष्य की आय की संभावना, कार्यात्मक दिव्यांगता और चिकित्सा खर्च जैसे अनेक पहलुओं का आंकलन भारतीय व्यवस्था में सरल नही है। जो न्याय प्रक्रिया उलझाउ एंव समय निकालने वाली बना देते है।

उत्तर प्रदेश में कक्षा 12 के छात्र की सड़क दुर्घटना में मृत्यु के एक मामले में प्रारंभिक रूप से मात्र ?2.60 लाख मुआवजे निर्धारण निचली अदालत से यह कहते हुए होता है कि छात्र के पास स्वयं का आय का जरिया नही है। जबकि परिवार छात्र की शिक्षा एंव पालन-पोषण पर नियमित लाखो रुपए खर्च कर रहा था। बाद में इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने भविष्य की संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए मुआवजा बढ़ाकर ?16 लाख के करीब कर दिया। यह उदाहरण बताता है कि किसी छात्र की वर्तमान आय शून्य होने का अर्थ यह नहीं हो सकता कि उसके भविष्य का आर्थिक मूल्य भी शून्य है। दिल्ली में 21 वर्षीय छात्र दुर्घटना में गंभीर शारीरिक अक्षमता होने के मामले में ट्रिब्यूनल ने शारीरिक अक्षमता और उसकी कार्यात्मक क्षमता पर पड़ने वाले प्रभाव को ध्यान में रखते हुए ?1.62 करोड़ से अधिक का मुआवजा निर्धारित किया। यह फैसले संकेत देते हैं कि न्यायालय वास्तविक आर्थिक क्षति और भविष्य की संभावनाओं को व्यापक दृष्टि से देखने का प्रयास तो रहे हैं। लेकिन सर्वसामन्य नीति के अभाव में सभी पीडित वास्तविक न्याय पाने में असफल साबित होते है। न्याय की ऊँची चौखट तक पहुँचने हर पीडित सक्षम नही होता है। देश में वर्ष 2023 में 35,203 पैदल यात्री मारे गये थे। जिन्हें सरकार द्वारा तय हिट एंड रन के आधार पर न्यूनतम सरकारी राशि तय कर दी गई थी। सडक दुंघटना में बच्चो के मौत का आंकडा 2352 था। मुआवजा तय करने वाली एजेंसियों ने बच्चो की आय एंव आश्रित संख्या शून्य मानकर मुआवजे की प्राथमिकता से पृथक कर दिया था।

मोटर वाहन अधिनियम की धारा 164 के तहत मृत्यु पर न्यूनतम रुपए 5 लाख और गंभीर चोट पर रु 2.5 लाख की निर्धारित क्षतिपूर्ति का प्रावधान करती है। लेकिन हिट एंड रन में सरकारी योजना के तहत मात्र 2 लाख तथा गंभीर चोट पर ?50 हजार की निश्चित राशि का निर्धारण है। लेकिन दुर्घटना में वाहन की पहचान होती है तो मामला मोटर दुर्घटना दावा अधिकरण में जाकर मृतक की आय, उम्र और भविष्य की संभावनाओं के आधार पर कहीं अधिक मुआवजे में बदल सकता है। लेकिन यहाँ भी तभी संभव हो पा रहा है, जब दोषी वाहन थर्ड पार्टी वाहन बीमा से युक्त है। अन्यथा न्यायालय वाहन मालिक पर दंड का निर्धारण करते अवश्य है, लेकिन मालिक की पर्याप्त संपत्ति न होने पर कुर्की आदेश खेल-तमाशा बनकर रह जाते है। देश में सरकारी परिवहन में भी मुआवजे में बडी हिस्पाद विसंगतियाँ विधमान है। रेल में जीवन की कीमत 8 लाख रुपए में निर्धारित होती है। मेट्रो रेल के मामले में भी सरकार ने जून 2025 में संशोधन द्वारा दुर्घटना में मृत्यु की क्षतिपूर्ति रुपए 5 लाख से बढ़ाकर रुपए 8 लाख की है। यह संशोधन महंगाई और वर्तमान आर्थिक परिस्थितियों के संदर्भ में महत्वपूर्ण है, लेकिन इसके बावजूद सड़क दुर्घटना के उन मामलों से तुलना करने पर एक अंतर दिखाई देता है जहां मोटर वाहन दुर्घटना में न्यायालय आय,भविष्य की संभावना और आश्रितों की संख्या को ध्यान में रखकर करोड़ों रुपये तक का मुआवजा निर्धारित कर सकते हैं। वही मुआवजा रेल दुर्घटना में सीमित हो जाता है। विमान दुर्घटना में दुंघटना मुआवजा राशि अर्न्तराष्टीय एंव घरेलू उडान के लिए बहुत अन्तर वाली है। अंतरराष्ट्रीय हवाई यात्रा में यात्री की मृत्यु अथवा शारीरिक क्षति के लिए दायित्व स्पेशल डायविंग राइटस(एसडीआर) में निर्धारित होता है। एसडीआर की कीमत रुपये में स्थिर नहीं होती। इसलिए इसे सीधे कोई स्थायी भारतीय राशि नहीं कहा जा सकता। 2025 में अहमदाबाद विमान दुर्घटना के संदर्भ में 1,51,880 एसडीआर का भारतीय मूल्य लगभग ?1.8 करोड़ के लगभग था।

यहां एक महत्वपूर्ण अंतर है। अंतरराष्ट्रीय विमान यात्रा में दायित्व की गणना अंतरराष्ट्रीय संधि के ढांचे के अनुसार होती है, जबकि घरेलू उडान में एयरलाइंस कम्पनियाँ शुरुआती मात्र बीस लाख का मुआवजा निर्धारित करती है। सड़क, रेल और मेट्रो में अलग-अलग भारतीय कानूनों और नियमों के तहत क्षतिपूर्ति निर्धारित होती है। इसलिए दुर्घटना में जान गंवाने वाले नागरिक के परिवार के लिए मुआवजे की व्यवस्था परिवहन के माध्यम से बदल जाती है। सडक पर जानवर एंव सडको पर गड्ढो के कारण होने वाली दुर्घटनाओ में अब उच्च एंव उच्चतम न्यायालयो ने अपना रुख बदला है। इन दोनो में अब मोटर वाहन अधिनियम के तहत कुछ प्रकरणो में न्यायालयो ने मुआवजा घोषित किए है। प्रतिवर्ष सडको पर गड्ढो के कारण एक हजार से अधिक निंदोष व्यति जान गंवाते है जबकि जानवरो से टकराने एंव हमले के कारण प्रतिवर्ष तीन हजार से अधिक मौतें हो रही है। यही वह बिंदु है जहां सरकार को मुआवजा में समरुपता एंव तत्परता की आवश्यकता है।

जीवन अमूल्य है। उसकी भरपाई संभव नहीं। लेकिन व्यवस्था इतनी संवेदनशील और वैज्ञानिक अवश्य होनी चहिए कि दुर्घटना में अपना सहारा खो चुका परिवार न्याय पाने की दूसरी लड़ाई में अपना शेष जीवन और संपत्ति न गंवाने पडे। मुआवजा जीवन की कीमत नहीं हो सकता। मृत व्यक्ति वापस नहीं आ सकता और स्थायी दिव्यांगता से बदला जीवन पुराने स्वरूप में नहीं लौट सकता। मुआवजा केवल परिवार को आर्थिक सहारा देने का माध्यम है। उसकी पीडित परिवार की आवश्यकता एंव सम्मानजनक राशि से पूर्ति होनी चहिए। देश में एक व्यापक राष्ट्रीय क्षतिपूर्ति नीति पर विचार मंथन आवश्यक है, जिसमें परिवहन का माध्यम प्राथमिक आधार न होकर व्यक्ति की वास्तविक आर्थिक और सामाजिक क्षति प्रमुख आधार बने। आय का प्रमाण न होने पर भी छात्र, गृहिणी, किसान, बुजुर्ग और असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों के योगदान का वैज्ञानिक मूल्यांकन, भविष्य की आय, कार्यात्मक दिव्यांगता, पुनर्वास, चिकित्सा खर्च, बच्चों की शिक्षा और आश्रितों की वास्तविक जरूरतों को समान महत्व मिलना चहिए। मुआवजा मामलों के लिए समयबद्ध प्रक्रिया, डिजिटल ट्रैकिंग, सरल आवेदन और प्रभावी अंतरिम सहायता की व्यवस्था मजबूत होनी चाहिए।

भारतीय दर्शन और संस्कृति में मनुष्य जीवन अमूल्य है। लेकिन दुर्घटना होने पर मुआवजा देते वक्त एजेंसियॉ मानव मूल्य को उसकी आय एंव दुर्घटना दौरान उपयोग हुए वाहन से जीवन मूल्य को तोलने लगते है। एक परिवार की दृष्टि से प्रत्येक व्यक्ति वर्तमान एंव भविष्य की आर्थिक, सामाजिक और भावनात्मक व्यवस्था का महत्वपूर्ण आधार होता है। किसी परिवार का कमाने वाला व्यक्ति अचानक दुर्घटना में मारा जाए या स्थायी रूप से दिव्यांग होता है तो न केवल परिवार का आय का स्रोत समाप्त होता है, बल्कि उस परिवार की पूरी जीवन-व्यवस्था चरमरा जाती है। बच्चों की शिक्षा, बुजुर्ग माता-पिता की देखभाल, गृहस्थी का संचालन और भविष्य की योजनाएं—सब कुछ एक साथ संकट के साए में आ जाते है। विडंबना यह है कि दुर्घटना में मनुष्य की मृत्यु अथवा स्थायी अपंगता का वास्तविक मूल्य परिवार से बेहतर कोई नहीं समझ सकता, लेकिन देश की कानूनन क्षतिपूर्ति व्यवस्था में उस मानवीय क्षति को आर्थिक रूप से मापने के अलग-अलग पैमाने हैं।





विनोद के. शाह अंबिका,
हास्पीटल रोड,
विदिशा-464001
मोबा. 9425640778

प्रथम अन्नकूट का भोग गिरिराज गोवर्धन को लगाकर प्रारम्भ हुआ अन्नकूट उत्सव!

द्वापर युग के अंत में जब भगवान श्री कृष्ण धर्म की स्थापना और समाज-रक्षा के लिए ब्रज-भूमि में देवकी के गर्भ से जन्म ले गोकुल में नंदराय के यहाँ बाल लीला करने पधारे तो एक बार परंपरागत इंद्र-पूजन के प्रसंग पर भी उनकी दृष्टि 56 प्रकार के पकवानों पर गई तब वे महज सात वर्ष के थे। उन्होंने नन्दराय जी से पूछा, तात, यह स्वादिष्ट पकवानों का अम्बार क्यो तैयार हो रहा है? क्या कोई महान देव का पूजन-समारोह है? या अन्य कोई उत्सव मनाया जाना है।

इस पर नन्दराय ने अपने भोले लाल को गोदी में बैठाकर पुचकारते हुए कहा कि लाल, हम ब्रजवासी अनेक वर्षों से अपनी सुरक्षा, गोधन की पूर्णता, सदृष्टि, धन-धान्य की वृद्धि के लिए देवाधिदेव इंद्र की पूजा करते है और उनसे हमें सब प्रकार का आनंद मिलता है। नन्दनन्दन ने बाबा नन्द राय की बात को बड़ी शांति से सुना और अपनी कोमल-आकर्षक वाणी से इंद्र के विरुद्ध वास्तविक विचार प्रकट करते हुए कहा तात, हम ब्रजवासी हैं, गायों को पालते है और गायों को चराने के लिए उत्तम चारा, पानी आदि समस्त सुविधाए हमे वन एवं पर्वत से सहज ही प्राप्त होते है इसलिए वन और पर्वत ही हमारे लिए सब कुछ है।

हम सब बाल गोपाल और ब्रजवासी सा सारा गोधन इस वन में निश्चित है और यहाँ हमारी गौएँ चरती है, हमें गौएं के लिए भरपूर मात्रा में चारा, झरनो का शीतल जल मिलता है, अत इस सामग्री से यदि इन्द्र की पूजा न कर पर्वतराज 'गिरिराज'की पूजा करें तो श्रेयस्कर है, इससे हमें सर्वथा लाभ और सुख होगा। श्री कृष्ण की गिरिराज गोवर्धन के प्रति व्यक्त की गई मधुर सलाह ने नन्दराय और ब्रजवासियों के हृदय में गहरा असर किया और सभी ने इंद्र की पूजा भेंट न कर यह 56 प्रकार की अन्नकूट पूजन सामग्री गिरिराज को अर्पित कर उनकी पूजा का निश्चय कर लिया। वह समय सुख-समृद्धि का था। प्रत्येक में ममता, सह-भ्रातृत्व, प्रेम का साम्राज्य था, अन्न-धन की विपुलता थी। श्री कृष्ण सभी ब्रजवासियों के प्राण-धन थे अतएव दुगुने उत्साह से कार्तिक शुक्ला प्रतिपदा को विविध भाँति के 56 प्रकार के पकवानो को बैलगाड़ियों में भरकर अपनी गायो को विभिन्न रंग-रोगन से सजाकर उनके सींगो-खुरो को स्वर्ण-चांदी से जड़कर, स्वय सुंदर वस्त्रों से सजधज कर सारे ब्रज-वासियों व ब्रज-रमणियो को साथ ले, गिरिराज की पूजा के लिये चल पडे।

पर्वत समीप था सभी ने आनंद-मग्न हो गिरिराज को प्रणाम किया। अनंतर विविध भाँति से स्वच्छ कर गिरिवर के सम्पूर्ण परिसर भूमि को गोबर से लीप विभिन्न प्रकार के मौसमी फलों एवं 56 प्रकार के पकवानों सहित परिक्रमा कर पूजा करने लगे। प्रथम स्वच्छ जल, पश्चात् इत्र, हल्दी, रोली (कुमकुम) और स्वच्छ जल से स्नान करा वस्त्र, चन्दन आदि से भूषित कर सुगंधित पुष्प-माला समर्पित की। धूप-दीप के बाद भोग समर्पण किया। पकवानो का समूह इतना था कि एक प्रकार से अन्न का कूट (कोट-पर्वत) बन गया और उसमें गिरिराज भी छुप गये। श्री कृष्ण ने एक स्वरूप से ब्रजवासियो के साथ गिरि का पूजन किया और अपने दूसरे रूप से अनेको भुजायो के द्वारा गिरिराज से सभृत हो ब्रजवासियो के पकवानो का भोग लगाया। इस प्रकार भगवान् का गिरिराज से प्रकट होकर भोग-लगाना देख ब्रजवासियो को बड़ी प्रसन्नता हुई। भोग के बाद शेष बचे चचे प्रसाद को अपने परिवार, ब्राह्मणो से लेकर सभी जातियों में बाँट दिया और सानंद अपने घरो को चल पडे।

इधर जब समय बीत गया और इन्द्र की पूजा न हुई तो इन्द्र के हृदय में विचार उठा और उसने प्रकारांतर से किये हुए ब्रजवासियो के सारे कृत्य को समझ लिया और अभिमान में भरकर अपने विनाशकरी मेघो को बुला आदेश दिया कि आज एक साधारण से गोपकुमार कृष्ण के कहने से मेरी पूजा भेंट ब्रजवासियों ने 'गिरि'राज गोवर्धन पर्वत को समर्पित कर गोवर्धन की पूजा की है, अत इनके बडे मद को चूर कर देना है और ब्रज-मडल को डुबाकर ही शांति लेनी है।

आज्ञानुसार ब्रज मण्डल पर मूसलाधार वर्षा होने लगी। इन्द्र का कोप देख सभी ब्रजवासी बुरी तरह भयभीत हो गए ओर इधर-उधर दौडने लगे और अपने सहायक नेता श्रीकृष्ण को पुकार कर सारी पीड़ा कह सुनाई। मृदुल हास्य करते हुए श्रीकृष्ण ने घबराहट भरी ब्रजवासियों की दशा का अवलोकन कर उनके भय को दूर करते हुए कहा तुम सभी भय-रहित हो परिवार गोधन के सहित गिरिराज के समीप चलो, वही तुम्हारी रक्षा करेगा।

गोप-गोपियों ने अपने परम प्रिय श्री कृष्ण की बात मानी और सब के सब शीघ्र वहाँ पहुँच गये, तब अतुल बलशाली श्री कृष्ण ने सभी के देखते-देखते गिरिराज-पर्वत को सहसा उठा लिया और सात दिन तक उसे धारण कर अपने ब्रजवासियों की उसके नीचे रक्षा कर चकित कर दिया। इद्र अपनी सारी शक्ति लगाकर थक गया और ब्रज का कुछ भी न विगाड सका, तब इन्द्र सुरभि गाय को साथ ले ब्रज भूमि में श्रीकृष्ण के मर्म को समझकर उनकी शरण में आया और श्री कृष्ण की अनुपम रूप-माधुरी को देख लोटपोट हो गया तथा श्रीकृष्ण की शरणागति पाकर उनकी स्तुति कर उनका 'गोविंद' नाम रख विनीत हो क्षमा माँगी। इस कृत्य से ब्रजवासी बड़े ही प्रमुदित हुए और गिरिराज की महत्ता कहने लगे।

गिरिराज की उत्पत्ति के विषय में विभिन्न पुराणों में वर्णन मिलता है कि गोलोक धाम-स्थित श्री कृष्ण के मन में एक समय 'रास-विहार'की इच्छा उत्पन्न हुई, परंतु विहार के लिए स्थान चाहिए, तब श्रीकृष्ण ने सजल-प्रेम-पूरित तेज को प्रकट किया, यही गिरिराज है। जब पूर्णावतार श्री कृष्ण गोलोक से लोक-रक्षार्थ ब्रज-भूमि में पधारे तब वे वृंदावन आए, धुति-रूपा गोपियो ने जन्म-ग्रहण किया तो वही गिरिराज शालमणि द्वीप के बीच द्रोणाचल पर्वत से उत्पन्न हुआ और ब्रजभूमि में लाया गया। गिरिराज को प्रतिदिन घटने का शाप भी मिला है।

कृष्णावतार के समय गिरिराज गोवर्धन की महानता सभी देवों-देवताओं के हृदय में व्याप्त रही जिससे वे गोपाल कृष्ण के रूप में उनकी स्तुति और आराधना करते रहे तभी से गोवर्धन का महात्म्य नित्यप्रतिदिन युग बदलने के बाद भी बढ़ता रहा है और कलिकाल में आज सभी गिरिराज गोवर्धन को श्रीकृष्ण के भगवद्-विग्रह रूप में पूजते आ रहे है। गोपाल कृष्ण के द्वारा ब्रजवासियों का अन्नकूट भेंट स्वीकारने के बाद कृष्णरूप में गिरिराज गोवर्धन आज भी पूजित है।



सदियो से चली आ रही यह 56 प्रकार के भोग और विभिन्न प्रकार के फल-फूल आदि की पूजा अर्चना गिरिराज गोवर्धनधारी श्रीकृष्ण को अर्पित की जाती है ओर सारा जगत उन्हे भेंट की गई इस सामग्री से अन्नकूट महोत्सव मनाकर ब्रजमण्डल की इस उदार परंपरा से जगत को सम्मोहित किए हुये है।

आत्माराम यादव
वरिष्ठ पत्रकार
श्रीजगन्नाथधाम काली मंदिर के पीछे, ग्वालटोली
नर्मदापुरम मध्यप्रदेश
मोबाइल 9993376616

भाई बहन के अटूट प्यार का पवित्र पर्व है भैया दूज



भाई और बहन का रिश्ता बड़ा पवित्र और अक्षय होता है। भाई चाहे उम्र में बड़े हो या छोटे, बहन के लिए वे हमेशा प्यारे, आदरणीय और अनमोल होते हैं। भाई भी हमेशा बहनों की भलाई और खुशहाली की कामना करते हैं। सबसे बड़ी बहन या दीदी भी अपने छोटे भाई बहनों के लिए मां की भूमिका निभाती हैं। 'भैया दूज' भी भाई बहनों के अटूट प्रेम,विश्वास और सम्मान का पर्व है। प्रति वर्ष दीपावली और काली पूजा के बाद कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि को भैया दूज का पावन पर्व मनाया जाता है। इसे भाई फोटा, भाई टिका, भाई द्वितीया या यम द्वितीया भी कहा जाता है। पौराणिक कथा के अनुसार सूर्य भगवान की पुत्री यमुना हमेशा अपने भाई यमराज को उनके यहां आने का सादर अनुरोध करती थीं। लेकिन व्यस्तता के कारण यमराज यमुना के घर नहीं जा पाते थे। एक दिन अचानक यमराज अपनी बहन यमुना के घर आ पहुंचे। यमराज के आने से बहन की खुशी का ठिकाना न रहा और उसने यमराज को परम आदर के साथ माथे पर तिलक लगाकर खूब स्वादिष्ट व्यंजन खिलाया। खुश होकर यमराज ने यमुना से वर मांगने को कहा। यमुना ने ऐसा वर मांगा कि इस तिथि को जो भी बहन अपने भाई के ललाट पर तिलक, टिका लगाएगी उसके भाई पर आपका भय नहीं रहेगा। अर्थात मृत्यु के देवता यमराज का भय नहीं होगा। यमराज ने यमुना के वर को मंजूरी दे दी। उसी घटना के परिपेक्ष्य में भैया दूज पर्व में बहनें अपने भाइयों के ललाट पर तिलक लगाकर उनकी मंगल कामना करतीं हैं।

अनित कुमार राय टिंकू, बाघमारा, धनबाद

कैप्टन जीएस सूरी की 27वीं पुण्य स्मृति पर हुआ श्रद्धांजलि समारोह

गाजियाबाद। कैप्टन जीएस सूरी एमवीसी मेमोरियल ट्रस्ट की ओर से 9 नवंबर को कैप्टन जीएस सूरी की 27वीं पुण्य स्मृति के अवसर पर श्रद्धांजलि एवं स्मृति समारोह का आयोजन किया। कार्यक्रम सुबह 10 बजे शास्त्री नगर स्थित जी-ब्लॉक के कैप्टन सूरी पार्क में आयोजित हुआ। समारोह कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप

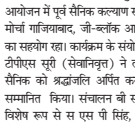

में मेजर जनरल रवि दूसाज (एडीजी प्रोसेसिंग बी) तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में लेफ्टिनेंट जनरल गोविंद सिंह चंदेल (सेवानिवृत्त), विधायक अजीत पाल त्यागी शामिल हुए। इस अवसर पर कैप्टन जीएस सूरी के शौर्य, बलिदान और देश के प्रति समर्पण को याद करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की जाएगी। आयोजन में पूर्व सैनिक कल्याण संघ गाजियाबाद, आतंकवाद विरोधी मोर्चा गाजियाबाद, जी-ब्लॉक आरडब्ल्यूए तथा पार्षद अमित त्यागी का सहयोग रहा। कार्यक्रम के संयोजक एवं आमंत्रक लेफ्टिनेंट कर्नल टीपीएस सूरी (सेवानिवृत्त) ने लोगों से समारोह में पहुंचकर वीर सैनिक को श्रद्धांजलि अर्पित करने वालो को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। संचालन बी सी बसल ने किया इस अवसर पर विशेष रूप से स एस पी सिंह, वरिष्ठ अधिवक्ता स तप्रीत सिंह जग्गी प्रदेश अध्यक्ष आतंकवाद विरोधी मोर्चा, अर्जुन चौधरी, गगन अरोड़ा, गुरजीत सिंह, अमित त्यागी आदि शामिल हुए।